Vol 5 Issue 3 Dec 2015

ISSN No : 2249-894X

# *Monthly Multidisciplinary Research Journal*

# *Review Of Research Journal*

## Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

## *Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org**

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 3 | Dec - 2015

Review Of Research

# हिन्दी के विकास में भारतीय सिनेमा का योगदान

किरण धनाजी अहिरराव
राणी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, पारोला जि जलगांव .

किरण धनाजी अहिरराव

**सारांश**

भूमंडलीकरण के इस दौर में भारतीय सिनेमा का अपना महत्व रहा है। भारत की विभिंन्न भाषाओं में हिन्दी सिनेमा का सबसे अधिक प्रचार–प्रसार रहा है किंतु उन सभी भाषाओं में हिन्दी सिनेमा का सबसे अधिक प्रचार– प्रसार हुआ है। भाषा की विश्वस्तर पर लोकप्रियता को देखते हुए तमाम निर्देशक एवं निर्माताओं ने हिन्दी भाषा एवं विभिंन्न प्रादेशिक भांषाओं में अपनी फिल्में बनाना प्रारम्भ किया। पिछले सौ वर्षों के इतिहास को यदि देखा जाए तो पता चलता है कि इनमे से कुछ फिल्में सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बॉक्स ऑफिस पर सुपर डुपर हिट हो चुकी है। इसी वजह से दिन पर दिन हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता भी बढती ही जा रही है। उसमें आए दिन नए–नए बदलाव भी हो रहे हैं। उसे देखते हुए कहाँ जा सकता है कि सिनेमा समाज के लिए मनोरंजन का उत्कृष्ट माध्यम है। इसी वजह से सिनेमा की प्रसिद्धि को देखते हुए मैंने इस शोध प्रपत्र में हिन्दी के विकास में भारतीय सिनेमा के योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। इसलिए यह अध्ययन बहुंत महत्वपूर्ण है।

**प्रस्तावना –**

आज के दौर में भारतीय सिनेमा को पुरे सौ साल हो चुके है। किसी भी देश में बनने वाली फिल्में वहाँ के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का दर्पण होती है। भारतीय सिनेमा के सौ साल के इतिहास में हम भारतीय समाज का चित्रण विभिन्न पहलुओं के आधार पर देखा जा सकता है।

**1) सिनेमा की प्रारंभिक अवस्था –**

सिनेमा मीडिया का एक सशक्त माध्यम है। समाज पर सिनेमा का प्रभाव प्राचीन समय से ही देखने को मिलता हैं। सिनेमा तकनीक का श्रेय थॉमस अल्वा एडीसन को जाता है। '' 3 अक्टूबर,, 1889 को उन्होंने इस तकनीक का सफल प्रदर्शन किया। एडिसन के तकनीकी यंत्रों में चित्र अलग–अलग प्लेटों पर लिए जाते थे।''[1] जार्ज इस्टमेन ने सेल्यूलाईड फिल्म का अविष्कार किया। उन्होने इस प्रकार सिनेमा तकनीकी को समृद्धि दी। ''सिनेमा का अविष्कार 28 दिसम्बर, 1895 को ल्यूमियरे बन्धुओं द्वारा किया गया।''[2] फ्रांस के ल्युमियरे ब्रदर्स ङअर्नेस्ट तथा लूई जूनियर) ने सिनेमाटोग्राफ नाम वाला यंत्र बनाया जिसे आधुनिक फिल्म जगत का पितामह कहा जा सकता है। ''भारत में वर्ष 1896 में मुंबई के वाटसन होटल में पहले चित्र का प्रदर्शन हुआ।''3 भारत में सन् 1899 से भारतीय सिनेमा की शुरुआत मानी जा सकती हैं। किंतु भारत में सिनेमा को पहली बार दर्शकों तक पहुँचाने का कार्य ल्युमेरे ब्रदर्स का है। ल्युमेरे ब्रदर्स की फिल्मों को देखकर दादा साहब फालके के मन में पौराणिक कथा पर आधारित फिल्म बनाने का विचार आया ।इसी वजह से "भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र का रुप पहले परदे पर दिखाया गया।"[4] यह सन् 1913 में बनी। इस फिल्म के निर्माता भारतीय सिनेमा के जनक दादा साहब फालके थे। किंतु इससे पहले सन् 1912 में 'पुंडलिक' फिल्म बनी। एक सौ साल कि लम्बी यात्रा में हिन्दी सिनेमा ने न केवल बेशुमार कला प्रतिभाएं दी बल्कि भारतीय समाज और चरित्र निर्माण के गठन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

2)भारतीय सिनेमा की पृष्ठभूमी– फिल्म या सिनेमा जिसे हिन्दी में चलचित्र कहते है। दृश्य एवं श्रव्य संचार माध्यमों में अपेक्षाकृत सबसे पुराना माध्यम है। सिनेमा को सबसे पहले लोगों तक पहुँचाने का कार्य ल्युमेरे ब्रदर्स का हैं। "फ्रांस के ल्मुमियरे बंधुओं ने पॅरिस में पहली बार 28 दिसंबर 1895 को लघुचित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की।"5 इस प्रदर्शनी में उन्होंने छः लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया। यह विश्व कि गतिशील फिल्मों कि पहली घटना मानी जाती है। इसके पश्चात 1899 में भारत में पहली बार लघु फिल्म बनाने में श्री भाटवडेकर को सफलता प्राप्त हुई। अपनी ही दुनिया की तस्वीरों की जीवंत रूप में प्रस्तुती की गई। भारत में सिनेमा के प्रणेता के रूप में ल्यूमियरे बंधुओं को श्रेय दिया जाता हैं। "मुंबई के वाटसन हॉटेल में 1 जुलाई 1896 में छः लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।"6 उसके पश्चात सन 1921 में धीरेन गांगुली ने 'इग्लैण्ड रिटर्न' नामक प्रथम सामाजिक फिल्म बनाई। बाबुराव पेंटर ने 1923 और 1925 में 'सिंदबाद' तथा 'सावकारी पाश' दो फिल्में बनाई । मदन थियेटर की 'साविंत्री' हिमांशु राय की 'लाइट ऑफ एशिया' इस युग की महत्वपूर्ण फिल्में रही।"7 लाइट ऑफ एशिया में महात्मा बुद्ध की भूमिका स्वयं हिमांशु राय ने की। लेकिन 1931 में मुक फिल्मों का सिलसिला खत्म हुआ। अब बोलने वाली फिल्में बनने लगी। सर आर्देशर इरानी के निर्देशन में बनी 'आलमआरा' फिल्म देश की पहली बोलती फिल्म थी। ये फिल्में श्वेत और श्याम थी। रंगीन फिल्मों का दौर 1937 में बनी फिल्म 'किसान कन्या' से प्रारंभ हुआ।

3) हिन्दी सिनेमा में मिल का पत्थर – भारतीय फिल्म के निर्माण का दौर शुरु हुआ तो वह कभी रुका नही, अनवरत रुप से जारी हैं। फिल्मों की शुरुआत पौराणिक मूक फिल्मों से हुई। ''आर्देशीर इराणी ने जब 'आलमआरा' बनाई तो मूकफिल्मों का स्थान सवाक फिल्मों ने लिया।''8 इस सवाक फिल्म के चलते मूक फिल्में बंद हो गई और दक्षिण भारत में भक्त प्रहलादङतेलगु) और कालिदास ङतमिल)सवाक फिल्में बनी। इस प्रकार पौराणिक फिल्मों से होते हुए सामाजिक, समस्या प्रधान, राजनैतिक पृष्ठभूमि को केन्द्र में रखकर, देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत फिल्में बनने लगी। उनमें "'दुनिया न माने','पडोसी', 'आदमी', 'देवदास', 'विद्यापति','सीता','अछूत कन्या','संत तुकाराम','वतन','एक ही रास्ता' आदि फिल्मों के माध्यम से जन–जागरण का प्रयास प्रारंभ हुआ।"9 इसी बीच रंगीन फिल्में बनाने का प्रयास भी आरंभ हुआ। इसके अतिरिक्त महबूब खान की 1957 में बनी फिल्म 'मदर इंडिया' हिन्दी फिल्म निर्माण के क्षेत्र में मिल का पत्थर मानी जाती हैं। '

4) हिन्दी साहित्य पर फिल्मों का निर्माण – हिन्दी फिल्मों पर एक समय ऐसा भी आया जब साहित्सकारों की रचनाओं, उनके उपन्यासों और कहाÐनियों को महत्व दिया गया। श्रेष्ठ उपन्यासों पर फिल्में बनाने के लिए दिग्दर्शक एवं निर्माताओं को बढावा दिया गया। प्रसिद्व साहित्य पर आधारित कुछ फिल्में बनी जो इस प्रकार है। ष्देवदासष –षरतचंद्र सन् 1928 ष्परिणीताष □ ष्रतचंद्र 1942, निर्माता– पुष्पति चटर्जी, 'मैला आचल – फणीष्वरनाथ रेणू पर ष्तीसरी कसमषॅ निर्माता बासू भट्टाचार्य, ष्सारा आकषाष राजेन्द्र यादवॉ निर्माता–वासु चटर्जी, ष्यहीं सच हैष□ मन्नू भंडारी पर आधारित ष्रजनीगंधाष निर्माता– बासू चटर्जी, ष'सूरज का सातवाÐ घोडा'ष□ धर्मवीर भारती, निर्माता– श्याम बेनेगल, सन् 1986, ष्एक चादर मैली सीष – राजेन्द्र सिंह बेदी, निर्माता : सुखवंत चड्ढा सन् 1985 ,मुंशी प्रेमचंदजी के ष्गोदानष उपन्यास पर जेतलीजी ने प्रेमचंद की आत्मा को सामने रखकर सन् 1963 में फिल्म बनाई। ष्गबनष– प्रेमग्रंद , निर्माता : ऋषिकेश मुखर्जी सन् 1961 ष्पिंजर'ष– अमृता प्रितम , निर्माता : चंद्र प्रकाश द्विवेदी सन् 2005 , ष्महात्मा वरर्सेज गाÐधीष – अमृता प्रितम पर फिल्म ष्गाÐधी माई फादर'ष , निर्माता– फिरोज अब्बास इसके अतिरिक्त ष्यासाषॅ ष्कागज के फूलषॅ ष्साहब बीबी और गुलामष जैसी फिल्मों को कौन भूल सकता है। ष्निर्मलाष उपन्यास पर आधारित फिल्म "हिन्दी साहित्यकारों में नाट्य उपन्यासकार भीष्म साहनी के ष्तमसष उपन्यास पर गोविंद निहलानी ने दूरदर्शन पर धारावाहिक एवं फिल्म बनायी।"10 इस फिल्म की हिन्दी जगत में सराहना की गयी। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के बंगाली उपन्यास पर ष्देवदासष फिल्म बनायी गयी। फणीश्वरनाथ रेणू की बहुचर्चित कहानी ष्महक गए गुलफामष पर आधारित फिल्म ष्तीसरी कसमष उसके पश्चात ष्बदनाम बस्तीषॅ ष्आषाढ का दिनषॅ ष्एक थी सुधाषॅ ष्सत्ताईस डाउनषॅ ष्रजनीगंधाषॅ ष्नदिया के पारषॅ राम कुमार वर्मा की ष्मृगनयनीषॅ पर ष्मृगनयनीषॅ संजीव के ष्काला सोनाष पर भी फिल्म बनी। 'भारतीय सिनेमा में साहित्यिक कृतियों पर सर्वाधिक फिल्में सत्यजीत राय ने बनाई है।''11

5) भारतीय हिन्दी सिनेमा और ऑस्कर –

विदेशों से फिल्म का सिलसिला शुरू हुआ और ऑस्कर की शुरूआत हुई। भारत से पहली बार महबुब खान की फिल्म 'मदर इंडिया'1957 को ऑस्कर के लिए भेजा गया। यह फिल्म विदेशी भाषा की अंतिम पाँच फिल्मों में नामांकित हुई,किंतु इस फिल्म को ऑस्कर नहीं मिला। दूसरी बार मीरा नायर की फिल्म 'सलाम बॉम्बे' ऑस्कर की दौड में पहुँची। तीसरी बार अमीर खान की 'लगान' ऑस्कर की रेस में पहुँची। लगान को लेकर जबरर्दस्त माहौल बना लेकिन ऑस्कर नहीं मिला। किंतु 'गाँधी' फिल्म ऑस्कर की दौड में सफल रही। 'गाँधी' फिल्म की कॉस्ट्युम डिजायनिंग के लिए भानु अथैया को ऑस्कर मिला। डॉ अर्जून तिवारी कहते है कि "फिल्म में विज्ञान की शक्ति और कला का सौंदर्य है जो मस्तिष्क को खाद देती हैं।"12 शायद इसी वजह से भारतीय सिनेमा मनोरंजन का सशक्त माध्यम हैं। इसने भारत में ही नहीं विश्वस्तर पर भी अपनी पहचान बनाई हैं। अंत में सिनेमा के क्षेत्र की अथक मेहनत रंग लाई, सन् 1992 में विश्व सिनेमा में सत्यजीत रे को मानद ऑस्कर अवार्ड से सन्मानित किया गया। वर्ष 2009 भारतीय फिल्म उद्योग के लिए खुशखबरी लेकर आया। जब भारतीय फिल्म 'स्लमडाग मिलेनियर' में 'जय हो' गीत के लिए गुलजार और संगीत के लिए ए. आर. रहमान को ऑस्कर पुरस्कार मिला। सुरों के बादशाह रहमान ने हिन्दी के अलावा अन्य कई भाषाओं की फिल्मों में भी संगीत दिया है। इसके सिवा कई भारतीय साहित्यकारों ने हिन्दी फिल्मों में अच्छी कहानिया दी जो दर्शकों के मानस पटलपर अमिट छाप छोड गयी।

6) हिन्दी सिनेमा और पत्रकारिता – हिन्दी सिनेमा और पत्रकारिता का घनिष्ठ संबंध हैं। पत्रिका जनसंपर्क का माध्यम है। फिल्मी पत्रिका की वजह से फिल्मी दुनिया की ताजा खबरें लोगों तक पहुंचती हैं। पत्रिकाएं हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं में प्रकाशित की जाती हैं। "इनमें हिन्दी कवियों, मूवी जगत, स्टार डस्ट, भानुप्रभा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।"13 इसके अतिरिक्त रेडियों के अधिकतर कार्यक्रम भी हिन्दी

फिल्मों के संबंध में होते हैं। फिल्मों की जानकारी, नायक– नायिकाओं का साक्षात्कार, हिन्दी सिनेमा का पुरस्कार वितरण समारोह एवं वार्ताएं शामिल होती हैं। हिन्दी सिनेमा जगत ने 'प्रेम शब्द को नया आयाम दिया। समय बदलता गया और प्रेम की अभिव्यक्ति के तरीके भी बदलते गए।

हिन्दी के विकास में फिल्म पत्रकारिता से जुडे साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने दायित्व से सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर पाठक तक हिन्दी फिल्मों की सटीक जानकारी पहुँचाई है। भारतीय सिनेमा भारत का सशक्त मीडिया हैं। सिनेमा के प्रति लोगों के बढते आकर्षण की वजह से "देश में नौ हजार सिनेमा घर हैं।जिसमे प्रतिदिन एक करोड मानव समूह फिल्में देखता है और विशेष रूप से फिल्म रिलिज होने पर पहले दिन पहला शो देखने की होड सबसे ज्यादा होती हैं। देश में अब तक लगभग पौने दो लाख फिल्में बन चुकी हैं।"14 यह विश्व का तीसरे नंबर का फिल्म उद्योग बन चुका हैं। भारतीय सिनेमा ने जहाँ सामाजिक अच्छाई को बताने का प्रयत्न किया वहीं सांस्कृतिक धरोहर को बरकरार रखने के लिए जनमानस को झकझोरने का प्रयास भी किया हैं। पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी जगत को उजागर करने का कार्य प्रिन्ट मीडिया द्वारा किया गया।

## निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी सिनेमा जगत में बॉलीवुड उद्योग सबसे पैसा कमाने वाला उद्योग है। इस उद्योग को आज पूरे सौ साल हो चुके हैं। आजादी के बाद हिन्दी सिनेमा उद्योग का विकास हुआ हैं। भारतीय फिल्मों को भारतीय निर्माता, निर्देशक,दिग्दर्शक और साहित्यकारों ने हॉलीवुड उद्योग से बचाकर रखा है। इसीलिए भारतीय सिनेमा भी वैश्विक बन गया है। भारत में स्वतंत्रता संग्राम, देश विभाजन जैसी ऐतिहासिक घटनाओं, विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर आधारित फिल्में बनायी गयी। 1950 के दशक में हिन्दी फिल्में श्वेत श्याम से रंगीन हो गयी। 1960 के दशक की फिल्में गोल्डन जुबली रही हैं। 1960 से 1970 के दशक की फिल्मों में हिंसा का प्रभाव रहा है। 1980 से 1990 के दशक की फिल्में प्रेम को केन्द्र में रखकर बनाइ गई हैं।1990–2013 के दशक में भारतीय फिल्में विदेशों में लोकप्रिय हुई और प्रवासी भारतीय लोगों के मन में हिन्दी फिल्मों के प्रति एक विशेष रूझान पैदा हुआ।

## संदर्भ सूची

1) विजयकुमार आनंद : राकष्नैम , इलैक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सूचना प्रोद्योगिकी , पृ 107
2) डॉ अर्जुन तिवारी , जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता ,पृ 94
3) ष्याम माथुर, सिने पत्रकारिता , राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी , जयपुर, प्रथम संस्करण 2008, पृ 5
4) अनिल झनकर– सिनेमा वयात आला :राजहंस प्रकाशन पुना, प्रथम संस्करण 1997 पृ 17
5) डॉ जितेन्द्र वत्स – हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम, पृ 28
6) डॉ जितेन्द्र वत्स – हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम, पृ29
7) रूपचंद गौतम – संचार से जनसंचार, श्री नटराज प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृ 15
8) भारत 2005– वार्षिक सन्दर्भग्रंथ – गवेषणा संदर्भ और प्रशिक्षण विभाग ,प्रकाशन विभाग ,सूचना और प्रसारण मंत्रालय , नई दिल्ली , पृ 573
9) डॉ जितेन्द्र वत्स – हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम, पृ 29
10) विकिपीडिया विश्वकोश– 2013
11) ष्याम माथुर, सिने पत्रकारिता , 384
12) डॉ रमेष्मेहरा – मीडिया निर्माण, त़क्षषिला प्रकाषन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008 पृ 118
13) रूपचंद गौतम –संचार से जनसंचार , श्री नटराज प्रकाषन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005,पृ 153
14)रचना भोला यामिनी – हिन्दी पत्रकारिता उद्भव एवं विकास पृ 31

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org